मानव व्यक्तित्व के विकास में प्रेरणा की भूमिका

(ROLE OF MOTIVATION IN DEVELOPMENT OF HUMAN PERSONALITY)

मानव व्यक्तित्व का निर्माण करने तथा उसे विकसित करने में प्रेरणा की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से प्रमाणित हुआ है कि प्रेरणा व्यक्ति की क्रियाओं को न केवल संचालित और नियन्त्रित करती है बल्कि उन्हें निर्देशित और रूपान्तरित करके एक सही दिशा भी प्रदान करती है। **शेरिफ** तथा **श्रीमती शेरिफ** ने जिन जैविक प्रेरकों तथा सामाजिक प्रेरकों का उल्लेख किया है, उनके सन्दर्भ में व्यक्तित्व के विकास पर प्रेरणाओं की भूमिका को अग्रांकित रूप में समझा जा सकता है :

जैविक प्रेरणाओं की भूमिका (Role of Biogenic Motives)

इनका सम्बन्ध उन जैविक आवश्यकताओं से है जो व्यक्ति को जीवित रखने के लिए आवश्यक होती हैं तथा जिन आवश्यकताओं को पूरा किये बिना मानव समाज का अस्तित्व सम्भव नहीं होता। उदाहरण के लिए, भूख, प्यास तथा काम की इच्छा जैविक आवश्यकताएँ हैं जिन्हें व्यक्ति सामाजिक सीख के द्वारा प्राप्त नहीं करता लेकिन फिर भी यह आवश्यकताएँ व्यक्ति के अधिकांश व्यवहारों तथा क्रियाओं को प्रभावित करती रहती हैं। भूख एक जैविक आवश्यकता है जिसकी माँग व्यक्ति में बेचैनी को जन्म देकर उसके शारीरिक और मानसिक सन्तुलन को बिगाड़ती है। स्वाभाविक रूप से यह दशा व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती है। यही कारण है कि जो व्यक्ति भूख से पीड़ित रहता है, उसका व्यक्तित्व उन लोगों से भिन्न होता है, जिनकी भूख की आवश्यकता सदैव पूरी होती रहती है। ऐसे उदाहरण उन क्षेत्रों में सरलता से देखे जा सकते हैं जहाँ प्राकृतिक विपदाओं के कारण भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा व्यक्ति समाज-विरोधी ढंग से भी आजीविका उपार्जित करने का प्रयत्न करने लगते हैं। जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की स्थिति में मानव व्यक्तित्व में कुण्ठा, द्वेष, क्रोध, तनाव, चिड़चिड़ापन तथा विचलनकारी प्रवृत्तियों का विकास होता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के विकास के लिए जिन जैविकीय आधारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है, उनमें जैविक अभिप्रेरकों का विशेष स्थान है।

इसके पश्चात् भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कुछ समय पहले तक व्यक्तित्व के विकास में मनोवैज्ञानिकों तथा मनोचिकित्सकों द्वारा जिन जैविकीय प्रेरकों को प्रधानता दी जाती थी, उन्हें सामाजिक परिवेश से पृथक् करके स्पष्ट किया जाता था। आज समाज मनोविज्ञान के विकास के साथ इस नए दृष्टिकोण का विकास हुआ है कि जैविक प्रेरक सामाजिक परिवेश ही एक विशेष रूप ग्रहण करते हैं तथा मानव व्यक्तित्व को प्रभावित करने में जैविक अभिप्रेरकों की भूमिका अपनी सामाजिक दशाओं के अनुसार तुलनात्मक होती है।

सामाजिक प्रेरणाओं की भूमिका (Role of Sociogenic Motives)

वर्तमान में मानव व्यक्तित्व को प्रभावित करने में सामाजिक प्रेरकों की भूमिका को अधिक महत्व दिया जाता है। इन प्रेरकों को हम अर्जित प्रेरक भी कहते हैं तथा इन्हें सामाजिक विरासत का अंग माना जाता है। शेरिफ तथा शेरिफ के अनुसार सामाजिक प्रेरक वे हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में प्राप्त करता है। यह प्रेरक समाजीकरण के माध्यम से मानव व्यक्तित्व का विकास करते हैं। ऐसे प्रेरक दो प्रकार के होते हैं—सामान्य सामाजिक प्रेरक तथा वैयक्तिक सामाजिक प्रेरक। इन्हीं के माध्यम से व्यक्तित्व के विकास में प्रेरणाओं की वास्तविक भूमिका को समझा जा सकता है।

सामान्य सामाजिक प्रेरक व्यक्ति को उन सामाजिक व्यवहारों के लिए प्रेरित करते हैं जो व्यक्ति में समायोजन, पारस्परिक सहयोग तथा दूसरों के हित की भावना को विकसित करके एक सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। मानव को अपने आरम्भिक जीवन से ही आत्म-प्रदर्शन की प्रेरणा मिलने लगती है जिसे वह अनेक व्यवहारों द्वारा अभिव्यक्त करता है। जब इस प्रेरणा की सन्तुष्टि होती है तब मानव-व्यक्तित्व में श्रेष्ठता की भावना विकसित होती है तथा परिस्थितियाँ इसके प्रतिकूल होने पर मनुष्य में हीनता की भावना विकसित हो जाती है। इसी तरह प्रशंसा और निन्दा जैसे प्रेरकों को भी व्यक्ति समाज में रहते हुए अर्जित करता है। यह प्रेरक भी उसके भावी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। प्रशंसा से जहाँ एक ओर

व्यक्ति प्रसन्नता, सन्तोष और सुख प्राप्त करता है, वहीं निन्दा से उसमें हीनता, तनाव और असन्तोष की वृद्धि होती है। इस प्रकार यह प्रेरक मानव व्यक्तित्व को सन्तुलित अथवा असन्तुलित बनाकर उसके विकास को प्रभावित करते हैं।

वैयक्तिक सामाजिक प्रेरक सामाजिक सीख से प्रभावित होने के बाद भी व्यक्तिगत प्रेरणाओं के रूप में होते हैं, अतः इन्हें व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व का एक तत्व माना जाता है। वैयक्तिक इच्छाएँ, मनोवृत्तियाँ, आदतें तथा आकांक्षाएँ आदि इसी तरह के वैयक्तिक सामाजिक प्रेरक हैं। यह प्रेरणाएँ सभी व्यक्तियों में एक-दूसरे से कुछ भिन्न होती हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में कुछ भिन्नता पायी जाती है। एक वैयक्तिक सामाजिक प्रेरक के रूप में व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ उसकी सामाजिक दशाओं से प्रभावित होती हैं तथा आयु और अनुभवों के साथ इनमें परिवर्तन होता रहता है। ऐसा प्रत्येक परिवर्तन मानव व्यक्तित्व के विकास को एक भिन्न रूप में प्रभावित करता है। इसी प्रकार आदतें भी ऐसी प्रेरणाएँ हैं जिन्हें व्यक्ति समाज में अर्जित करता है। यह आदतें रचनात्मक भी होती हैं तथा समाज-विरोधी भी। मानव व्यक्तित्व के विकास में रचनात्मक आदतों का जहाँ प्रकार्यात्मक योगदान होता है वहीं समाज-विरोधी अथवा बुरी आदतें मानव व्यक्तित्व को विघटित कर देती हैं। सच तो यह है कि आदतें व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग हैं। यह कठिन-से-कठिन दशाओं में भी व्यक्ति को क्रिया करने की प्रेरणा देती हैं और व्यवहारों को एक दिशा प्रदान करती हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मानव व्यक्तित्व के विकास में जैविक तथा सामाजिक प्रेरकों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यह सच है कि समकालीन समाज मनोवैज्ञानिक मानव व्यक्तित्व के विकास में जैविक प्रेरकों को अधिक महत्वपूर्ण नहीं मानते लेकिन व्यक्तित्व के विकास के लिए आरम्भिक सुविधाएँ प्रदान करने में इनकी निश्चय ही एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यदि व्यक्ति की जैविकीय आवश्यकताएँ समुचित ढंग से पूर्ण नहीं हो पातीं तो उसका व्यक्तित्व सन्तुलित रूप से विकसित नहीं हो पाता। इसके बाद भी आज अधिकांश समाज मनोवैज्ञानिक मानव व्यक्तित्व को उसके परिवेश की उपज मानते हैं जो अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है। इसका विस्तृत उल्लेख हम 'संस्कृति एवं व्यक्तित्व की विवेचना' के अन्तर्गत करेंगे।

प्रश्न

(QUESTIONS)

1. प्रेरणा से आप क्या समझते हैं ? प्रेरणा के विभिन्न प्रकारों की विवेचना करें।
   What do you understand by motivation ? Discuss the types of motivation. (**मगध**, 1992, 94; **मुजफ्फरपुर**, 1992, 94, 96; **पटना**, 1996; **वीर कुँवरसिंह**, 1994)
2. सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा दें। सामाजिक और जैविक प्रेरणा में अन्तर स्पष्ट करें।
   Define Social Psychology. Distingiush between social and biological motivations. (**भागलपुर**, 1995)
3. प्रेरणा की परिभाषा दें। व्यक्तित्व के विकास में प्रेरणा की भूमिका को स्पष्ट करें।
   Define motivation. Discuss the role of motivation in the development of personality. (**मगध**, 1993, 95; **मुजफ्फरपुर**, 1993, 97; **वीर कुँवरसिंह**, 1995; **भागलपुर**, 1996; **पटना**, 1992, 97)
4. प्रेरणा की अवधारणा एवं भूमिका की विवेचना कीजिए।
   Discuss the concept and role of motivation. (**मुजफ्फरपुर**, 1995)

5. मानव व्यवहार पर प्रेरणाओं के वंचन एवं तृप्ति के महत्व को उदाहरण सहित समझाइये।
   Illustrate the importance of deprivation and satisfaction of motives on human behaviour. (पटना, 1993)
6. प्रेरणा की परिभाषा कीजिए तथा मानव व्यवहार के निर्धारण में इसके महत्व की विवेचना कीजिए।
   Define motivation and discuss its importance in determining human behaviour. (पटना, 1994)
7. निम्नांकित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (अ) जैविकीय प्रेरणा (Biogenic motive)। (वीर कुँवरसिंह, 1995)
   (ब) अचेतन प्रेरणाएँ (Unconscious motives)। (पटना, 1994)
8. प्रेरणा के प्रमुख सिद्धान्तों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।
   Discuss briefly the major theories of motivation.
9. प्रेरणा से प्रभावित व्यवहार की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
   Describe the basic characteristics of motivated behaviour.